पंजाब केसरी

श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ केसरी

SATURDAY, 24 NOV 2018. तापमान अधिकतम 26° न्यूनतम 13° आज मौसम साफ रहेगा। सूर्योदय 07.07 सूर्यास्त 05.36 SRIGANGANAGAR-HANUMANGARH KESARI

महिला प्रतिनिधियों ने जाना जल प्रबंधन और संरक्षण

बीकानेर, 23 नवम्बर (राजेंद्र): सैंटर फॉर सोशल रिसर्च की डायरैक्टर डॉ. रंजना कुमारी ने कहा है कि ग्रामीण भारत में जल प्रबंध का काम जैंडर से जुड़ा मुद्दा है और बड़े पैमाने पर महिलाओं को इस काम से जोड़ा जाना चाहिए। हमारी परियोजना से पता चल रहा है कि ग्रामीण महिलाएं और उनका परिवार जब व्यवस्थित और संगठित तरीके से वाटर बॉडीज का प्रबंध करना सीख जाता है तो भारी लाभ में रहता है। वे शुक्रवार को 23 से 25 नवम्बर तक चलने वाली जल संरक्षण व जलवायु परिवर्तन पर आयोजित 3 दिवसीय कार्यशाला को संबोधित कर रही थी।

कार्यशाला में उपस्थित महिला जनप्रतिनिधि। (राजेंद्र)

मंच पर उपस्थित अधिकारी व अन्य अतिथि। (राजेंद्र)

उन्होंने कहा कि ग्रामीण राजस्थान की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों को जल प्रबंध और संरक्षण का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह एक ऐसी परियोजना का भाग है जिसका मकसद ग्रामीण महिलाओं में राज्य के वाटर बॉडीज (तालाब, जलाशय, पोखर) का प्रबंध करने के लिए कौशल विकास करना है। भारत में लिंग के आधार पर भेदभाव न करने वाला समाज बनाने की दिशा में काम करने वाले एक संगठन, सैंटर फॉर सोशल रिसर्च ने एक अनूठी राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया है ताकि केस स्टडी सांझा किए जा सकें और ग्रामीण महिलाओं से भारत में ग्रामीण जल प्रबंध, संरक्षण और सूरक्षा से जुड़े सर्वश्रेष्ठ व्यवहारों के बारे में जाना जा सके। इस परियोजना में राजस्थान की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों (ई.डब्ल्यू.आर.) को वाटर बॉडीज के रख-रखाव, जल संरक्षण और वाटर हार्वैस्टिंग (संचयन) की व्यवस्था का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ कौशल विकास किया जा रहा है ताकि सरकार को जैंडर बजटिंग के लिए प्रभावित किया जा सके और जल प्रबंध के सरकारी ठेके लिए जा सकें।

भारत के भिन्न हिस्सों के विशेषज्ञ जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन पर सामग्री मुहैया कराएंगे

उन्होंने कहा कि कार्यशाला में भाग लेने वालों को यह मौका मिलेगा कि वे जैंडर, जल, पंचायती राज व्यवस्था और पी.आर.आई. लीडरशिप के बारे में जानें। भाग लेने वालों को भिन्न अनुभवों से जल संरक्षण और प्रबंध के सर्वश्रेष्ठ व्यवहारों के बारे में भी पता चलेगा जो केरल, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली के साथ राजस्थान के भी हैं। भारत के भिन्न हिस्सों के विशेषज्ञ जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन पर सामग्री मुहैया कराएंगे जो महिला स्वास्थ्य और हाईजीन पर केंद्रित होगा। राजस्थान की निर्वाचित महिला प्रतिनिधि वाटर बॉडीज के प्रबंध के अपने अनुभव भी सांझा कर रही है। कार्यशाला में विशेषज्ञ जल प्रबंध के साथ-साथ राजस्थान और भारत के दूसरे राज्यों के वाटर शैड मैनेजमैंट के परंपरागत तकनीक भी सांझा करेंगे। इसके अलावा, इसमें एक सत्र राजस्थान में पानी से जुड़ी नीतियों के जैंडर एनालिसिस का भी होगा।

महिलाएं राज्य में जल प्रबंध का काम अपने हाथ में लेने के लिए गठजोड़ बना रही है

सैंटर फॉर सोशल रिसर्च ने हन्नस सिडेल फाऊंडेशन (एच.एस.एस.) की सहायता से 2012 में स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन परियोजना की शुरूआत की थी। निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों ने इसमें प्रशिक्षण हासिल किया था और फिर इसे आगे स्थानीय ग्रामीण महिलाओं तथा समाज के अन्य सदस्यों को दिया था। ये प्रशिक्षण जल संरक्षण, वॉटर बॉडीज के रख-रखाव, वाटर हार्वैस्टिंग के साथ-साथ समाज के साथ जुड़कर रहने के कौशलों, समूह में निर्णय लेने और सरकारी संस्थाओं के साथ मेल-जोल जैसे तकनीकी कौशल मुहैया कराने पर केंद्रित थे। राजस्थान के सिरोही, सांगानेर और जालौर जिलों में ये परियोजनाएं शुरू हो चुकी हैं और सकारात्मक नतीजे दिख रहे हैं। अब ये महिलाएं राज्य में जल प्रबंध का काम अपने हाथ में लेने के लिए गठजोड़ बना रही हैं। ये कार्यशालाएं उसी सफलता को आगे बढ़ाने के लिए हैं। इस परियोजना के तहत जन चेतना संस्थान (जे.सी.एस.), ग्राम विकास नवयुवक मंडल (जी.वी.एन.एम.एल.), रिवा औदिव्य (राजस्थान की स्थानीय एक्सपर्ट), जगवीर सिंह (तकनीकी विशेषज्ञ) और कमला शर्मा (जयपुर से स्थानीय रिसोर्स पर्सन) स्थानीय सांझेदार रहे हैं। इस कार्यशाला में जल और जलवायु परिवर्तन विशेषज्ञों के साथ स्त्री-पुरुष में भेदभाव खत्म करने के काम करने वाले लोग भी आए हैं। इनके साथ निर्वाचित महिला प्रतिनिधि, सरकारी अधिकारी भी इस कार्यशाला में हिस्सा ले रहे है।